ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाता जेएसएलपीएस

झारखंड की ग्रामीण महिलाओं का हौसला बढ़ाने व आत्मनिर्भर बनाने में झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी यानी जेएसएलपीएस की महती भूमिका है. समूह के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को जोड़ने, उन्हें बाहरी वातावरण से अवगत कराने व अपनी जरूरतों को पूरा करने में जेएसएलपीएस एक अहम रोल अदा करता है. यही कारण है कि कल की ग्रामीण महिलाएं, आज कहीं भी और किसी भी जगह अपने आत्मनिर्भर बनने की कहानी बेधड़क बताती हैं. समूह की महिला सदस्य न सिर्फ आत्मनिर्भर बन रही हैं, बल्कि गांवों से गरीबी खत्म करने में भी भरपूर सहयोग कर रही हैं.

रांची जिले के कांके प्रखंड स्थित सुकुरहुटू दक्षिण पंचायत सचिवालय के सामने खड़ी सखी मंडल की सदस्य.

पंचायत ने बदली सुकुरहुटू दक्षिणी की स्थिति

रांची जिला अंतर्गत कांके प्रखंड की एक पंचायत है सुकुरहुटू दक्षिण. पंचायत चुनाव के बाद इस पंचायत में विकास की किरणें पहुंची हैं. इसमें पंचायत प्रतिनिधियों की भी अहम भूमिका है. यहां के ग्रामीण भी काफी जागरूक हैं. यही कारण है कि पंचायत में विकास दिख रहा है. मूलभूत सुविधाओं पर विशेष जोर दिया गया है. गांव की सड़कों को मुख्य सड़क से जोड़ा जा रहा है. चार मोहल्ले में नालियों का निर्माण हुआ है. इन नालियों के माध्यम से गांव का गंदा पानी गांव से बाहर निकाला जाता है. बिजली की व्यवस्था भी बेहतर है. 100 स्ट्रीट लाइट से पूरा गांव जगमग हो रहा है. सौर ऊर्जा आधारित 12 सोलर लाइट की व्यवस्था की गयी है, जिसके कारण बिजली की निर्भरता भी काफी कम हुई है. स्वच्छ भारत मिशन का असर यहां दिखता है. करीब 150 शौचालय बन गये हैं और कई बन रहे हैं. स्वयं सहायता समूह की सदस्य गांव की सड़क, नालियों एवं कूड़े-कचरे को साफ करने में काफी अहम योगदान दे रही हैं. पंचायत क्षेत्र में शिक्षा की अच्छी व्यवस्था है. यहां बच्चों की प्राथमिक शिक्षा की शुरुआत आंगनबाड़ी केंद्र से ही हो जाती है. पंचायत क्षेत्र के पांच आंगनबाड़ी केंद्रों में गर्भवती महिलाएं एवं शिशुओं की जांच व टीकाकरण का कार्य होता है. उपस्वास्थ्य केंद्र में एएनएम दीदियों का सकारात्मक सहयोग मिलता है. वहीं पशु चिकित्सालय में कृत्रिम गर्भाधान की व्यवस्था है. इस पंचायत के अधिकतर ग्रामीण कृषि पर निर्भर हैं. पहले परंपरागत खेती पर जोर था, लेकिन आजीविका कृषक मित्र व सरकार के सहयोग से आधुनिक खेती पर जोर दिया जाने लगा है. सिंचाई की भी अच्छी व्यवस्था है. इसके बावजूद इस पंचायत में आज भी कई समस्याएं मुंह बाये खड़ी हैं. बेरोजगारी आज भी गंभीर समस्या बनी हुई है.

सुषमा देवी

प्रखंड कांके
जिला रांची

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी युवा आज बेरोजगार हैं, हालांकि केंद्र व राज्य सरकार ने इन बेरोजगारों के लिए कई स्वरोजगार के द्वार खोले हैं. इस पंचायत की महिला मुखिया रीना देवी मानती हैं कि पंचायत चुनाव के बाद से अब तक इस पंचायत क्षेत्र में 60 फीसदी विकास कार्य हुए हैं. ग्रामीणों में जागरूकता का असर है कि विकास की रफ्तार तेज हुई है. सरकारी योजनाओं का लाभ भी ग्रामीण उठा रहे हैं. कुल मिलाकर देखा जाये, तो ग्रामीणों की जागरूकता के कारण ही इस पंचायत में सकारात्मक बदलाव दिख रहा है.

कैफे ने बदली दीदियों की जिंदगी

अपने आजीविका कैफे के सामने खड़ी समूह की दीदियां.

रांची जिला अंतर्गत अनगड़ा प्रखंड के अनगड़ा गांव की दीदियां आजीविका कैफे चला कर खुद व अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही है. प्रेरणा जागृति सखी मंडल से जुड़ीं गांव की 12 महिलाओं ने खुद को आत्मनिर्भर बनाने को ठानी और आज परिणाम सबके सामने है. अनगड़ा गांव में इस सखी मंडल का गठन 17 अक्तूबर 2010 को हुआ. गठन के बाद समूह की बैठकों में महिलाएं मिलती, अपनी समस्या बताती और उसके समाधान पर भी चर्चा होती. इसी दौरान दीदियों ने कुछ अलग करने को सोची. खान-पान में महारात हासिल करने वाली दीदियों ने कैफे खोलने का निर्णय लिया. इस काम में जेएसएलपीएस का भरपूर सहयोग मिला. अनगड़ा प्रखंड परिसर के एक भवन में आज आजीविका कैफे बखूबी चल रहा है. प्रखंड में आयोजित बैठक या मीटिंग में चाय-नाश्ते की जिम्मेदारी आजीविका कैफे को मिलती और कैफे से जुड़ी दीदियां बखूबी इस जिम्मेदारी को निभाती है. कैफे के माध्यम से आमदनी भी होने लगी और इससे जुड़ी दीदियों के जीवन में भी बदलाव आना शुरू हो गया. अब तो स्थिति ऐसी हो गयी है कि प्रखंड कार्यालय के अलावे अन्य क्षेत्र में भी किसी आयोजन में चाय-नाश्ते की जिम्मेदारी मिलती है. आजीविका कैफे से जुड़ी डोला दीदी कहती हैं कि कैफे ने दीदियों की जिंदगी बदल दी है. पहले लोग जानते नहीं थे, वहीं अब कैफे दीदी कह कर बुलाते हैं, तो काफी खुशी मिलती है.

रूबी खातून

प्रखंड अनगड़ा
जिला रांची

लीलावती दीदी कहती हैं कि आजीविका कैफे के माध्यम से उन्हें एक रोजगार मिल गया है. अब हमें कहीं भटकने जरूरत नहीं है. कैफे संचालन में सभी दीदियों का सकारात्मक सहयोग मिलता है. कहती हैं कि अनगड़ा प्रखंड या कलस्टर में आयोजित कार्यक्रमों में खाना खिलाने की जिम्मेदारी मिलना ग्रामीण महिलाओं में बढ़ते आत्मविश्वास को दर्शाता है.

उत्पादक समूह के प्रशिक्षण में मिली अहम जानकारी

रांची जिला स्थित अनगड़ा प्रखंड के हेसल गांव में उत्पादक समूह से जुड़ी दीदियों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन हुआ. विकास आजीविका उत्पादक समूह की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में उत्पादक समूह में होने वाली उन्नत खेती, पशुधन, लघु वनोपज आदि को पोस्टर के माध्यम से बताया गया. बताया गया कि पशुधन के अंतर्गत बकरी पालन, मुर्गी, सूकर, ब्रायलर पालन आदि के लिए राज्य सरकार की ओर से शेड निर्माण के लिए साढ़े सात हजार रुपये दिये जाने का प्रावधान है. वहीं, चारा, टीकाकरण एवं दवाईयों की पूर्ति के लिए जोहार योजना के तहत 80 फीसदी अग्रिम राशि दिये जाने का प्रावधान है. उन्हें यह भी बताया गया कि उन्नत कृषि के लिए उत्पादक समूह के हर सदस्य को एक केंचुआ खाद यूनिट व आधुनिक नर्सरी दिये जाने का भी प्रावधान है, ताकि किसानों को सालोंभर गुणवत्तायुक्त पौधा मिल सके. जोहार योजना के द्वारा मिट्टी की जांच, ड्रिप पद्धति से सिंचाई व्यवस्था, एकीकृत भंडारण गृह एवं मौसम आधारित फसल की जानकारी दी जायेगी. किसानों को 30 फीसदी ऋण पर छूट मिलेगा.

पिंकी महतो

प्रखंड अनगड़ा
जिला रांची

सिलाई-कढ़ाई के सहारे मंजू व रेणु हुईं आत्मनिर्भर

गिरिडीह जिला अंतर्गत डुमरी प्रखंड क्षेत्र की मंजू और रेणु सिलाई मशीन के सहारे आत्मनिर्भर बन गयी हैं. यशोदा आजीविका सखी मंडल से जुड़ीं दोनों दीदियों ने अपना और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया. रोजी-रोटी के लिए उनके पति को गांव से बाहर जाना पड़ता था. इसके बाद भी परिवार का भरण-पोषण किसी तरह से हो पाता था. पैसों की आर्थिक तंगी के कारण रेणु हाथों से लोगों का कपड़ा सिलाई कर किसी तरह गुजर-बसर कर रही थी. समूह से जुड़ी दोनों दीदियों ने समूह से ऋण लेकर सिलाई मशीन खरीदी. घर पर ही सिलाई की दुकान खोल कर लोगों का कपड़ा सिलाई करने लगीं. दोनों सलवार सूट, साधारण व डिजायनर ब्लाउज सीने लगीं. धीरे-धीरे आमदनी बढ़ने लगी. इससे परिवार की माली हालत में भी सुधार होने लगा. दोनों दीदियां कहती हैं कि सखी मंडल से जुड़ कर सपना साकार हुआ है. दोनों दीदियां क्षेत्र की अन्य दीदियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रोत्साहित भी करती हैं.

मुनिया देवी

प्रखंड डुमरी
जिला गिरिडीह

पानी की किल्लत से निजात दिला रहा है ग्राम संगठन

पलामू जिला अंतर्गत लेस्लीगंज प्रखंड का एक गांव है धनगांव. ग्राम संगठन की मदद से धनगांव के ग्रामीणों को पानी किल्लत से राहत मिली है. हालांकि इसके लिए ग्रामीणों ने पंचायत प्रतिनिधियों की जगह स्वयं सहायता समूह के सदस्यों से गुहार लगायी थी. सदस्यों ने ग्राम संगठन को जानकारी देने पर ग्राम संगठन के विशेष पहल पर ग्रामीणों को पानी मिलने लगा. इसके पीछे की कहानी भी काफी रोचक है. धनगांव के एक चापाकल से पानी नहीं लेने का आदेश इसलिए पुलिस-प्रशासन ने दिया, क्योंकि पानी लेने के दौरान चापाकल के आस-पास काफी कीचड़ हो जाता था. सड़क किनारे चापाकल का होना और उसके पानी से सड़क के आस-पास कीचड़ हो जाने से कई बार दुर्घटनाएं हो रही थीं. कच्ची सड़क होने के कारण यह क्षेत्र दलदल जैसा बन गया था. इधर, पुलिस-प्रशासन के आदेश से ग्रामीण काफी परेशान हो गये थे. इस समस्या के समाधान के लिए समूह की सदस्यों ने इसकी जानकारी ग्राम संगठन को दिया. ग्राम संगठन ने चापाकल के पास गड्ढा खोद कर सोखता बनाने का निर्णय लिया. तत्काल सोखता बनाया गया, जिससे सड़क किनारे होने वाले कीचड़ की समस्या से निजात मिल गयी. अब ग्रामीणों को पानी के लिए मशक्कत नहीं करनी पड़ती है.

नयनतारा कुमारी

प्रखंड लेस्लीगंज
जिला पलामू

समूह को मां समान मानती दीदियां

खूंटी जिला अंतर्गत रनिया के बीएमएमयू में सीबीआरएम कमेटी गठित करने संबंधी बैठक आयोजित की गयी. इस दौरान बैंक लिंकेज कमेटी में तीन कलस्टर की सभी सीसी, लेखापाल और अध्यक्ष को शामिल किया गया. इस बात पर जोर दिया गया कि जिस स्वयं सहायता समूह में राशि की निकासी नहीं हुई है, वहां राशि निकासी की व्यवस्था जल्द की जाये. साथ ही ससमय ऋण वापसी पर विशेष जोर देने की बात कही गयी. इसके तहत बैंक लिंकेज की राशि 3,46,50,000 दी गयी है. साथ ही खाता खुलवाने व आधार सिडिंग कराने पर भी बल दिया गया. हर माह बैठक करने के अलावा बैंक लिंकेज सदस्यों का रिव्यू करना, समूह में राशि के लेन-देन को सही तरीके से करने पर भी जोर दिया गया. बैठक में दीदियों ने कहा कि समूह हमारे लिए मां के समान है. बैठक में रनिया कलस्टर की अध्यक्ष बसंती डंडगा, सीसी दिनेश कुमार मुंडा, पंकज कुमार, खटंगा कलस्टर से रोशनी कंडुलना, लेखापाल कांति देवी, सीसी आनंद, सुमन होरो, गोदे से बीपीएम दिव्य ज्योति के अलावा यूबीआइ रनिया के शाखा प्रबंधक, बैंक मित्र सहित काफी संख्या में दीदियां शामिल हुईं.

अमिता देवी

प्रखंड रनिया
जिला खूंटी

लाह उत्पादन से बदली जिंदगी

पेड़ों पर लाह चढ़ाने व उतारने का तरीका देखती महिला किसान.

लातेहार जिले के बरवाडीह प्रखंड क्षेत्र में लाह की खेती की जा रही है. झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के माध्यम से क्षेत्र के चार गांव हरातु, मुंडू, चुगारू व नावाडीह में दीदियां कुसमी लाह की खेती कर रही हैं. करीब 295 दीदियों को पांच-पांच किलोग्राम कुसुमी लाह का बीहन दिया गया. इसके साथ ही पेड़ों पर लाह चढ़ाने व उतारने और समय पर दवाईयों का छिड़काव संबंधी प्रशिक्षण भी दिया गया. इस दौरान कुसुम के पेड़ों का सर्वे कर लाह चढ़ाया गया. सर्वे के दौरान पता चला कि इन क्षेत्रों में करीब 10 साल पहले लाह की खेती होती थी, लेकिन धीरे-धीरे यह लुप्त होने लगा. इसका मुख्य कारण किसानों के पास लाह का बीहन नहीं होना था, लेकिन अब स्थिति बदल गयी है. समूह से जुड़ी दीदियों को समूह की ओर से लाह का बीहन दिया गया. इससे दीदियों में आत्मविश्वास जगा है. अपने आजीविका को बेहतर करने के लिए नया व्यापार करने की इच्छा जगी. वर्ष 2018-19 के दौरान करीब 405 लाह किसानों को जोहार योजना के माध्यम से लाह का बीहन दिये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है. जेएसएलपीएस के माध्यम से करीब सात सौ परिवारों को लाह दिया जाना है. इससे गरीब परिवार को अपनी आजीविका चलाने में मदद मिलेगी. इसके तहत 295 परिवार को कुसम पेड़ पर लाह चढ़ाने, 205 परिवार को बेर पर और 200 परिवार को पलाश के पेड़ पर लाह चढ़ाने की योजना निर्धारित की गयी है. जोहार योजना के माध्यम से किसान दीदियों को किसान उत्पादक समूह से जोड़ कर कई लाभ दिये जा रहे हैं. हर गांव में दो एवीएम (आजीविका वनस्पति मित्र) का चयन किया गया. इन्हें प्रशिक्षण भी दिया गया, ताकि ग्रामीणों को लाह उत्पादन संबंधी विस्तृत जानकारी मिल सके. इस बारे में दीदियां कहती हैं कि अगर एक पेड़ में पांच किलोग्राम लाह चढ़ाया जाता है और फसल बेहतर होती है, तो करीब 40 किलोग्राम लाह का उत्पादन हो सकता है. इस संबंध में जोहार योजना के अधिकारी लाह खेती से जुड़ी महिलाओं को समय-समय पर मार्गदर्शन भी देते हैं.

नेहा कुमारी

प्रखंड बरवाड़ीह
जिला लातेहार